

रविवार 15 दिसंबर, 2024

विषय— भगवान मनुष्य के संरक्षक हैं

स्वर्ण पाठ: भजन संहिता 37: 3

"यहोवा पर भरोसा रख, और भला कर, देश में बसा रह, और सच्चाई में मन लगाए रह। "

उत्तरदायी अध्ययन: यशायाह 45: 1, 5, 22

यहेजकेल 34: 11, 13, 14, 23, 24

- 1 यहोवा अपने अभिषिक्त के प्रति यों कहता है।
- 5 मैं यहोवा हूं और दूसरा कोई नहीं, मुझे छोड़ कोई परमेश्वर नहीं;
- 22 हे पृथ्वी के दूर दूर के देश के रहने वालो, तुम मेरी ओर फिरो और उद्धार पाओ! क्योंकि मैं ही ईश्वर हूं और दूसरा कोई नहीं है।
- 11 देखो, मैं आप ही अपनी भेड़-बकरियों की सुधि लूंगा, और उन्हें ढूंढूंगा।
- 13 और उन्हीं के निज भूमि में ले आऊंगा; और इस्राएल के पहाड़ों पर ओर नालों में और उस देश के सब बसे हुए स्थानों में चराऊंगा।
- 14 मैं उन्हें अच्छी चराई में चराऊंगा, और इस्राएल के ऊंचे ऊंचे पहाड़ों पर उन को चराई मिलेगी; वहां वे अच्छी हरियाली में बैठा करेंगी, और इस्राएल के पहाड़ों पर उत्तम से उत्तम चराई चरेंगी।
- 23 और मैं उन पर ऐसा एक चरवाहा ठहराऊंगा जो उनकी चरवाही करेगा, वह मेरा दास दाऊद होगा, वही उन को चराएगा, और वही उनका चरवाहा होगा।
- 24 और मैं, यहोवा, उनका परमेश्वर ठहरूंगा, और मेरा दास दाऊद उनके बीच प्रधान होगा; मुझ यहोवा ही ने यह कहा है।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. उत्पत्ति 1: 1, 2 (और आत्मा), 11, 12, 26 (से), 29, 31 (से 1st.)

- 1 आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।
- 2 और पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी; और गहरे जल के ऊपर अन्धियारा था: तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डलाता था।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- 11 फिर परमेश्वर ने कहा, पृथ्वी से हरी घास, तथा बीज वाले छोटे छोटे पेड़, और फलदाई वृक्ष भी जिनके बीज उन्हीं में एक एक की जाति के अनुसार होते हैं पृथ्वी पर उगें; और वैसा ही हो गया।
- 12 तो पृथ्वी से हरी घास, और छोटे छोटे पेड़ जिन में अपनी अपनी जाति के अनुसार बीज होता है, और फलदाई वृक्ष जिनके बीज एक एक की जाति के अनुसार उन्हीं में होते हैं उगें; और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।
- 26 फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं; और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगने वाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें।
- 29 फिर परमेश्वर ने उन से कहा, सुनो, जितने बीज वाले छोटे छोटे पेड़ सारी पृथ्वी के ऊपर हैं और जितने वृक्षों में बीज वाले फल होते हैं, वे सब मैंने तुम को दिए हैं; वे तुम्हारे भोजन के लिये हैं:
- 31 तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है। तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार छठवां दिन हो गया॥

2. भजन संहिता 36: 6 (हे भगवान)-8 (से)

- 6 तेरा धर्म ऊंचे पर्वतों के समान है, तेरे नियम अथाह सागर ठहरे हैं; हे यहोवा तू मनुष्य और पशु दोनों की रक्षा करता है॥
- 7 हे परमेश्वर तेरी करुणा, कैसी अनमोल है! मनुष्य तेरे पंखों के तले शरण लेते हैं।
- 8 वे तेरे भवन के चिकने भोजन से तृप्त होंगे, और तू अपनी सुख की नदी में से उन्हें पिलाएगा।

3. व्यवस्थाविवरण 8: 7-9 (से), 10

- 7 क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे एक उत्तम देश में लिये जा रहा है, जो जल की नदियों का, और तराइयों और पहाड़ों से निकले हुए गहिरें गहिरें सोतों का देश है।
- 8 फिर वह गेहूं, जौ, दाखलताओं, अंजीरों, और अनरों का देश है; और तेलवाली जलपाई और मधु का भी देश है।
- 9 उस देश में अन्न की महंगी न होगी, और न उस में तुझे किसी पदार्थ की घटी होगी।
- 10 और तू पेट भर खाएगा, और उस उत्तम देश के कारण जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देगा उसका धन्य मानेगा।

4. दानियेल 1: 1, 3-6, 8, 10-15, 18-21

- 1 यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के तीसरे वर्ष में बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने यरूशेलम पर चढ़ाई कर के उसको घेर लिया।
- 3 तब उस राजा ने अपने खोजों के प्रधान अशपनज को आज्ञा दी कि इस्राएली राजपुत्रों और प्रतिष्ठित पुरुषों में से ऐसे कई जवानों को ला,

- 4 जो निर्दोष, सुन्दर और सब प्रकार की बुद्धि में प्रवीण, और ज्ञान में निपुण और विद्वान् और राजमन्दिर में हाजिर रहने के योग्य हों; और उन्हें कसदियों के शास्त्र और भाषा की शिक्षा दे।
- 5 और राजा ने आज्ञा दी कि उसके भोजन और पीने के दाखमधु में से उन्हें प्रतिदिन खाने-पीने को दिया जाए। इस प्रकार तीन वर्ष तक उनका पालन पोषण होता रहे; तब उसके बाद वे राजा के साम्हने हाजिर किए जाएं।
- 6 उन में यहूदा की सन्तान से चुने हुए, दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल, और अजर्याह नाम यहूदी थे।
- 8 परन्तु दानिय्येल ने अपने मन में ठान लिया कि वह राजा का भोजन खाकर, और उसके पीने का दाखमधु पीकर अपवित्र न होए; इसलिये उसने खोजों के प्रधान से बिनती की कि उसे अपवित्र न होना पड़े।
- 10 और खोजों के प्रधान ने दानिय्येल से कहा, मैं अपने स्वामी राजा से डरता हूं, क्योंकि तुम्हारा खाना-पीना उसी ने ठहराया है, कहीं ऐसा न हो कि वह तेरा मुंह तेरे संगी के जवानों से उतरा हुआ और उदास देखे और तुम मेरा सिर राजा के साम्हने जाखिम में डालो।
- 11 तब दानिय्येल ने उस मुखिये से, जिस को खोजों के प्रधान ने दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल, और अजर्याह के ऊपर देखभाल करने के लिये नियुक्त किया था, कहा,
- 12 मैं तेरी बिनती करता हूं, अपने दासों को दस दिन तक जांच, हमारे खाने के लिये सागपात और पीने के लिये पानी ही दिया जाए।
- 13 फिर दस दिन के बाद हमारे मुंह और जो जवान राजा का भोजन खाते हैं उनके मुंह को देख; और जैसा तुझे देख पड़े, उसी के अनुसार अपने दासों से व्यवहार करना।
- 14 उनकी यह बिनती उसने मान ली, और दस दिन तक उन को जांचता रहा।
- 15 दस दिन के बाद उनके मुंह राजा के भोजन के खाने वाले सब जवानों से अधिक अच्छे और चिकने देख पड़े।
- 16 तब जितने दिन के बाद नबूकदनेस्सर राजा ने जवानों को भीतर ले आने की आज्ञा दी थी, उतने दिन के बीतने पर खोजों का प्रधान उन्हें उसके सामने ले गया।
- 17 और राजा उन से बातचीत करने लगा; और दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल, और अजर्याह के तुल्य उन सब में से कोई न ठहरा; इसलिये वे राजा के सम्मुख हाजिर रहने लगे।
- 20 और बुद्धि और हर प्रकार की समझ के विषय में जो कुछ राजा उन से पूछता था उस में वे राज्य भर के सब ज्योतिषियों और तन्त्रियों से दस गुणे निपुण ठहरते थे।
- 21 और दानिय्येल कुसू राजा के पहिले वर्ष तक बना रहा॥

5. यशायाह 49: 8, 9 (वे), 10

- 8 यहोवा यों कहता है, अपनी प्रसन्नता के समय मैं ने तेरी सुन ली, उद्धार करने के दिन मैं ने तेरी सहायता की है; मैं तेरी रक्षा कर के तुझे लोगों के लिये एक वाचा ठहराऊंगा, ताकि देश को स्थिर करे और उजड़े हुए स्थानों को उनके अधिकारियों के हाथ में दे दे; और बंधुओं से कहे, बन्दीगृह से निकल आओ;
- 9 और जो अन्धियारे में हैं उन से कहे, अपने आप को दिखलाओ! वे मार्गों के किनारे किनारे पेट भरने पाएंगे, सब मुण्डे टीलों पर भी उन को चराई मिलेगी।

- ¹⁰ वे भूखे और प्यासे होंगे, न लूह और न घाम उन्हें लगेगा, क्योंकि, वह जो उन पर दया करता है, वही उनका अगुवा होगा, और जल के स्रोतों के पास उन्हें ले चलेगा।

6. भजन संहिता 107: 1, 9

- ¹ यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; और उसकी करुणा सदा की है!
⁹ क्योंकि वह अभिलाषी जीव को सन्तुष्ट करता है, और भूखे को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 507: 3-6

आत्मा प्रत्येक वस्तु को विधिवत रूप से खिलाती और कपड़े पहनाती है, जैसा कि यह आध्यात्मिक सृष्टि की पंक्ति में प्रकट होता है, इस प्रकार ईश्वर के पितृत्व और मातृत्व को कोमलता से व्यक्त करता है।

2. 530: 5-12

दिव्य विज्ञान में, मनुष्य ईश्वर के द्वारा कायम है, होने का दिव्य सिद्धांत। परमेश्वर के आदेश पर पृथ्वी, मनुष्य के उपयोग के लिए भोजन लाती है। यह जानकर, यीशु ने एक बार कहा था, "से कहता हूं, कि अपने प्राण के लिये यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएंगे?" — अपने निर्माता के विशेषाधिकार पर नहीं मानते हुए, लेकिन सभी के पिता और माता को पहचान कर, जो मनुष्य को खिलाने और कपड़े पहनने में सक्षम है, जैसे वह गेंदे के साथ करता है।

3. 62: 13-16, 20-26, 29-30

"अपने जीवन के बारे में कम सोचना, कि हम क्या खाएंगे या क्या पीएंगे"; "अपने शरीर के बारे में कम सोचना कि हम क्या पहनेंगे" - यह बढ़ती पीढ़ी के स्वास्थ्य के लिए आपके सपनों से कहीं अधिक लाभकारी होगा।

हमें अधिक से अधिक बुद्धिमत्ता को महत्व नहीं देना चाहिए, लेकिन कम और कम, अगर हम बुद्धिमान और स्वस्थ होंगे दिव्य मन, जो कली और फूल बनाता है, मानव शरीर की देखभाल करेगा, यहां तक कि यह लिली को कपड़े देगा; लेकिन गलत धारणाओं, मानवीय अवधारणाओं के कानूनों में जोर देकर कोई भी भगवान की सरकार के साथ हस्तक्षेप नहीं करते हैं।

जीवन के हमारे झूठे विचार शाश्वत सद्भाव को छिपाते हैं, और उन बीमारियों का उत्पादन करते हैं जिनकी हम शिकायत करते हैं।

4. 388: 20-5

यदि भोजन यीशु द्वारा अपने शिष्यों के लिए तैयार किया गया था, तो यह जीवन को नष्ट नहीं कर सकता।

तथ्य यह है कि भोजन मनुष्य के पूर्ण जीवन को प्रभावित नहीं करता है, और यह स्वयं स्पष्ट हो जाता है, जब हम सीखते हैं कि भगवान हमारा जीवन है। क्योंकि पाप और बीमारी आत्मा या जीवन के गुण नहीं हैं, इसलिए हमारे पास अमरता की आशा है; लेकिन अपनी वर्तमान समझ से परे जाना मूर्खता होगी, और जब तक हम पूर्णता प्राप्त नहीं कर लेते और जीवित आत्मा की स्पष्ट समझ प्राप्त नहीं कर लेते, तब तक खाना बंद करना मूर्खता होगी। समझ के उस उत्तम दिन में, हम न तो जीने के लिए खाएंगे और न ही खाने के लिए जीएंगे।

यदि मनुष्य यह सोचता है कि भोजन मन और शरीर के सामंजस्यपूर्ण कार्यों को बिगाड़ता है, तो या तो भोजन या इस विचार को त्याग देना चाहिए, क्योंकि दण्ड विश्वास के साथ जुड़ा हुआ है। यह कौन सा होगा? यदि यह निर्णय क्रिश्चियन साइंस पर छोड़ दिया जाए, तो यह इस विश्वास और हर गलत विश्वास या भौतिक स्थिति पर मन के नियंत्रण के पक्ष में दिया जाएगा।

5. 494: 5-14, 15 (यीशु)-19

क्या यह विश्वास करना बेवफाई की प्रजाति नहीं है कि मसीहा के रूप में इतना महान कार्य स्वयं या ईश्वर के लिए किया गया था, जिसे यीशु के उदाहरण से अनन्त सद्भाव को बनाए रखने के लिए किसी सहायता की आवश्यकता नहीं थी? लेकिन नश्वर लोगों को इस मदद की ज़रूरत थी, और यीशु ने उनके लिए रास्ता बताया। ईश्वरीय प्रेम हमेशा से मिला है और हमेशा हर मानवीय आवश्यकता को पूरा करेगा। यह कल्पना करना ठीक नहीं है कि यीशु ने दिव्य शक्ति का चयन केवल संख्या के लिए या सीमित समय के लिए ठीक करने के लिए किया, क्योंकि सभी मानव जाति के लिए और सभी समयों में, दिव्य प्रेम सभी अच्छे की आपूर्ति करता है।

यीशु ने शारीरिक शक्ति के साथ-साथ आत्मा की असीम क्षमता की अक्षमता का प्रदर्शन किया, इस प्रकार मानव भावना को अपने स्वयं के दोषों से भागने में मदद करने और दिव्य विज्ञान में सुरक्षा की तलाश करने के लिए।

6. 197: 11-15, 21-29

भौतिक संरचना और नियमों के बारे में जितना कम कहा जाएगा, तथा नैतिक और आध्यात्मिक नियमों के बारे में जितना अधिक सोचा और कहा जाएगा, जीवन स्तर उतना ही ऊंचा होगा और मनुष्य मूर्खता या बीमारी से उतना ही दूर होगा।

हमें बताया जाता है कि हमारे पूर्वज जो सादा भोजन खाते थे, उससे वे स्वस्थ रहते थे, लेकिन यह गलत है। इस अवधि में उनके आहार से अपच का उपचार नहीं हो सकेगा। सिर में स्वास्थ्य के नियम और पेट में सबसे अधिक सुपाच्य भोजन होने पर भी अपच रोग रहेगा। हमारे समय की अनेक नारीवादी धारणाएं तब तक सुदृढ़ नहीं हो पाएंगी, जब तक कि व्यक्तिगत राय में सुधार नहीं आता और नश्वर विश्वास अपनी त्रुटि का कुछ अंश खो नहीं देता।

7. 222: 29-2

अपच के उपचार की तलाश में किसी भी पदार्थ से परामर्श न करें, और जो आपके सामने रखा जाए उसे खाएं, "विवेक के कारण कोई प्रश्न न पूछें।" हमें इस गलत धारणा को नष्ट करना होगा कि जीवन और बुद्धि पदार्थ में हैं, तथा हमें स्वयं को शुद्ध और परिपूर्ण चीजों में स्थापित करना होगा।

8. 509: 16-17, 20-24

ईश्वर ब्रह्माण्ड का निर्माण और पालन करता है।

तथाकथित खनिज, सब्जी, और पशु पदार्थ अब समय या सामग्री संरचना से अधिक आकस्मिक नहीं हैं, जब वे "सुबह के सितारे एक साथ गाते थे।" मन ने पृथ्वी में होने से पहले "खेत का पौधा" बनाया।

9. 264: 13-19, 28-31

जैसा कि नश्वर भगवान और मनुष्य के बारे में अधिक सही दृष्टिकोण प्राप्त करते हैं, सृष्टि की बहुपक्षीय वस्तुएं, जो पहले अदृश्य थीं, दृश्यमान हो जाएंगी। जब हम महसूस करते हैं कि जीवन आत्मा है, तो कभी भी नहीं, न ही इस मामले में, यह समझ आत्म-पूर्णता में विस्तारित होगी, सभी को ईश्वर में मिल जाएगी, अच्छा होगा, और किसी अन्य चेतना की आवश्यकता नहीं होगी।

जब हम क्रिश्चियन साइंस में रास्ता सीखते हैं और मनुष्य के आध्यात्मिक होने को पहचानते हैं, तो हम भगवान की रचना को समझेंगे और समझेंगे, - पृथ्वी और स्वर्ग और मनुष्य की सभी महिमा।

10. 520: 17 (भगवान)-20 (से:), 23-26, 30-6

... ..जिस दिन प्रभु परमेश्वर [यहोवा] ने पृथ्वी और आकाश को बनाया: तब मैदान का कोई पौधा भूमि पर न था, और न मैदान का कोई छोटा पेड़ उगा था।

यहाँ यह जोरदार घोषणा है कि ईश्वर सब कुछ मन से बनाता है, पदार्थ के माध्यम से नहीं, पौधा बीज या मिट्टी के कारण नहीं बढ़ता, बल्कि इसलिए बढ़ता है क्योंकि विकास मन का शाश्वत आदेश है। ... आत्मा मन

के विज्ञान के माध्यम से कार्य करती है, मनुष्य को कभी भी जमीन जोतने के लिए प्रेरित नहीं करती, बल्कि उसे मिट्टी से श्रेष्ठ बनाती है। इसका ज्ञान मनुष्य को मिट्टी, पृथ्वी और उसके वातावरण से ऊपर उठाकर सचेतन आध्यात्मिक सद्भाव और शाश्वत अस्तित्व की ओर ले जाता है।

यहाँ पर प्रेरित अभिलेख उस अस्तित्व की कथा को समाप्त करता है जिसका न तो आरंभ है और न ही अंत। जो कुछ भी बना है वह परमेश्वर का कार्य है, और सब कुछ अच्छा है।

11. 550: 5-7

ईश्वर ही जीवन या बुद्धि है, जो जानवरों के साथ-साथ पुरुषों की व्यक्तित्व और पहचान को बनाता और संरक्षित करता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्विषा, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6